ISSN 2320-6263 | UGC APPROVED JOURNAL NO 64395
RNI REGISTRATION NO MAHMUL/2013/49893

RESEARCH ARENA

A MULTI-DISCIPLINARY INTERNATIONAL REFEREED RESEARCH JOURNAL

Vol 5 | Issue 11 | Feb 2018

समकालीन हिंदी पद्य साहित्य विवेचन

SPECIAL ISSUE NO. 2

संपादक
डॉ. प्रकाश बन्सीधर खुळे

समकालीन हिन्दी कहानी में सामाजिक चेतना
प्रा. आर.एम.खराडे
148-153

समकालीन कविताओं में विद्रोही स्वर
प्रा. डॉ कलशेटटी एम. के.
154-158

समकालिन कविता में दलित चेतना के विविध आयाम
प्रा. बालिका रामराव कांबळे
159-163

हिंदी गजल में सामाजिक बोध
डॉ. मारोती यमुलवाड
164-168

समकालीन कवि : लीलाधर जगुडी
स.प्रा. मुजावर एस.टी.
169-173

सुशिला टाकभौरे की कविताओं में
अभिव्यक्त नारी
प्रा. भेंडेकर एन.एस.
174-178

२१ सदी के अनुदित दलित उपन्यास में अभिव्यक्त नारी संवेदना
'योगीराज वाघमारे कृत' टुटना फुटना उपन्यास के विशे संदर्भ में
डॉ. पंडित गायकवाड
179-184

सृष्टि के बुनियादी सवालों से जुझते-'हवा में हस्ताक्षर'
डॉ. प्रकाश कोपर्डे
185-192

VISHWABHARATI RESEARCH CENTRE

RESEARCH ARENA
ISSN 2320-6263
Vol 5. Issue 11. Feb 2018. pp. 164-168
Paper received: 01 Feb 2018.
Paper accepted: 16 Feb 2018.
© VISHWABHARATI Research Centre

हिंदी गजल में सामाजिक बोध

डॉ. मारोती यमुलवाड

विश्व–साहित्य की सर्वाधिक लोकप्रिय विधाओं में एक है गजल । गजल परंपरा पर जब हम दृष्टि डालते है तो हम देखते है कि अमीर खुसरो, कबीर, मीरा, गालिब से भारतेंदु, निराला और त्रिलोचन तक आते–आते गजल का सूफीयाना अंदाज, आशिक और माशूका के संबंधों की चर्चा, औरतों से बातचीत के प्रारंभिक अर्थ संकोच से आगे जाकर व्यक्ति, परिवार समाज, शासक, राजनीति, व्यवस्था, शोषक और शोषित, रोजी–रोटी, गरीबी, अपराध, बेकारी, मंहगाई, पूँजीवाद, भ्रष्टाचार, धोखाधडी, बेईमानी, अशिक्षा, धर्म के नाम पर दंगे, आम आदमी की पीडा, प्रांतवाद, आतंकवाद, अलगाववाद, फैशन, मूल्यों का विघटन, सामाजिक बदलाव की बेचैनी आदि विषयों को भी गजल ने अपने विषय परिधि में समेटा है । फलस्वरुप सामाजिक बोध हिंदी गजलों का कथ्य बनना स्वाभाविक ही है । वर्तमान समय में समाज का यथार्थ चित्रण करना ही हिंदी गजलकारों के रचनाधर्मिता का प्रधान उद्देश्य रहा है । सामाजिक जीवन के यथार्थ एवं विसंगतियों , विद्रुपताओं को उसने अपनी अभिव्यक्ति का आधार बनाया उन पर उसने कठोर प्रहार भी किए है । हिंदी गजलकारों ने युगीन परिवेश को दृष्टि में रखकर सामाजिक समस्याओं का विविध रुपों में चित्रण किया है ।

हिंदी गजलकारों ने समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार को भी अपनी गजलों का कथ्य

डॉ. मारोती यमुलवाडः हिंदी विभाग, बलभीम महाविद्यालय, बीड

बनाया है । आज सामाजिक व्यवस्था ही भ्रष्ट होती जा रही है । सडकों पर भ्रष्टाचार का कीचड फैला हुआ है और हम सभी उसमें सने हुए है । दुष्यंतकुमार ने भ्रष्ट सामाजिक व्यवस्था पर करारी चोट की है ।

हर सडक पर इस कद्र कीचड बिछा है

हर किसी का पाँव घुटनों तक सना है ।१

इसी व्यवस्था को स्पष्ट करनेवाले गोपालदास सक्सेना नीरज है । वे गजलों के माध्यम से समाज में परिवर्तन लाना चाहते है । उन्होंने अन्याय के विरोध में आवाज उठाई है । जैसे –

है बहुत अंधियारा अब सूजर निकलना चाहिए

जिस तरह से भी यह मौसम बदलना चाहिए ।

फँस गया है भेडियों के झुंड में कोई हिरन

अब तो हर एक हाथ से पत्थर उछलना चाहिए ।२

आज की सामाजिक व्यवस्था का कारण समाज ही है । वर्तमान समाज व्यवस्था के मापदण्ड कुछ बदले हुए है, जो पतन की ओर जा रहे हैं । समाज फिर भी विवश है । वह इन आपतियों का सामना करना नहीं चाहता बल्कि जैसा है वैसे ही जीवन जीना चाहता है । दुष्यंतजी ने भारतीय व्यक्ति की सहनशीलता की परिसीमा पर कटाक्ष करते हुए लिखा है –

न हो कमीज तो पाँवों से पेट ढँक लेगें

ये लोग कितने मुनासिब हैं इस सफर के लिए ।३

महानगरों में पनपती विद्रुपता की त्रासद स्थितियों का यथार्थ चित्रण भी हिंदी गज़लकारों ने मार्मिकता के साथ किया है । समाज में आज ऐसी परिस्थितियाँ निर्माण हो गयी है कि मनुष्य संबंधहीन हो गया है । दूसरों के सुख दुख के प्रति वह उदासीन है । दिन प्रतिदिन वह संवेदनहीन होता जा रहा है । शहरों में तो वह बहुत अधिक आत्मकेंद्रीत हो गया है । उसकी इस प्रवृत्ति को दुष्यंतकुमार ने इन शब्दों में व्यक्त किया है ।

इस शहर में वो कोई बारात हो या वारदात

अब किसी भी बात पर खुलती नहीं है खिडकियाँ ।४

वर्तमान युग में सामाजिक मूल्यों के विघटन, महानगरीय जीवन की विद्रुपता, भौतिकता, प्रधान सभ्यता के फ़लस्वरुप आम आदमी का जीवन सुरक्षित नहीं रह सका । साम्प्रदायिक सद्भाव के अभाव में दंगे–फसाद बढ रहे हैं, स्वार्थ ने मनुष्य को बर्बर बना दिया है । राजनीतिक स्वार्थ से प्रेरित दलों के द्वारा आंदोलन करना एवं शक्ति–प्रदर्शन हेतु जुलूस निकालना । आम बात हो गयी है । इन सब स्थितियों में पथराव, लूटमार, कर्फ्यू इ. त्रासद घटनाएँ मनुष्य को भयभीत बनाये हुए है ।

सैर के वास्ते सडकों पे निकल आते थे

अब तो आकाश से पथराव का डर होता है ।५

डॉ. कुँअर बेचैन की गजलों में साम्प्रदायिक दंगों का वर्णन नजर आता है । उन्होंने समाज की खोखली मानसिकता का अध्ययन करते हुए आतंकवाद के परिणामों को गजलों के माध्यम से दर्शाया है ।

है दिन भी अंगारों के, हर रात अंगारों की

यह किसने हमें दी है, सौगात अंगारों की ।

मुश्किल है बहुत मुश्किल, अब घर से निकल पाना

कागज की छतरियाँ है, बरसात अंगारों की ।

क्यों आग की लपटों से, घर मेरा बचा रहता

आँधी की तरह आयी बारात अंगारों की ।६

आज दौर में आम आदमी अनेक यातानाओं से गुजर रहा है आम आदमी की तकलीफ, पीडा और आम आदमी के कठोर परिश्रम को हिंदी गजलकारों ने अपनी गजल के माध्यम से अभिव्यक्त किया है ।

सिर से सीने में कभी पेट से पाँवों में कभी

एक जगह हो तो कहें दर्द इधर होता है ।७

आज समाज में मानवता, सत्य, अहिंसा, सहनुभूति, पारस्पारिक प्रेम, संवेदना आदि मूल्यों का विघटन हो रहा है । परिणाम स्वरुप समाज की स्थिति बिगडती जा रही है । इसे भी हिंदी गजलकारों ने अपना कथ्य बनाया । इसका वर्णन करते हुए दुष्यंतकुमार लिखते हैं –

हालतें जिस्म, सूरतें जाँ और भी खराब

चारों तरफ खराब, यहाँ और भी खराब

नजारों में आ रहे हैं नजारे बहुत बुरे

होठों में आ रही है जुबाँ और भी खराब ।८

वर्तमान युग में हमारी भारतीय संस्कृति और सभ्यता पर पाश्चात्य संस्कृति और सभ्यता का बहुत गहरा असर हुआ है । परिणामस्वरुप आज की इस मिनी सभ्यता ने नारी के शरीर से वस्त्रों की मात्रा धीरे-धीरे कम कर दी है । इसी कारण नारी की सुंदरता, सुंदरता न रहकर फहूडता बन गई है । इसी वेशभूषा पर व्यंग्य करते हुए दुष्यंतकुमार लिखते है -

जिस्म पहरावों में छुप जाते थे, पहरावों में

जिस्म नंगे नजर आने लगे यह तो हद है ।९

आज समाज में नैतिकता के मापदण्ड बदल गये है । चारों तरफ बेईमानी, झूठ और फरेब का ही बोलबाला है । लोग अपने स्वार्थ हेतु बडी सहजता से वादे मुकर जाते हैं । निजी स्वार्थ हेतु ईमान बदल देना आज के आज के आदमी की आदत बन चुकी है ।

ईमान बदल देते हैं तारीख की तरह

इक -झूठ का इतिहास है मेरी गली के लोग ।१०

आज वर्तमान समय में मानवता का कोई मूल्य नहीं रह गया । दिन-प्रतिदिन स्वार्थ सिध्दि हेतु मानवता की पग-पग पर हत्या की जा रही हैं जिसे कुँअर बेचैन ने इस प्रकार व्यक्त किया गया है ।

हर एक सडक पै हो रहा इंसानियत का कत्ल,

पूरे शहर में फिर भी कोई सनसनी नहीं ।११

वर्तमान युग में भोगवादी संस्कृति के बढते प्रभाव के कारण बलात्कार, नारी शोषण एवं अत्याचार जैसी त्रासद घटनाएँ बढ रही है । इसी भोगवादी प्रवृत्ति के कारण नारी की इज्जत का कोई मूल्य नहीं रहा अकेली औरत का जीवन तो दुश्वार हो गया है । मनुष्य की इस पाश्विक प्रवृत्ति का चित्रण हिंदी गजलकार ने मार्मिक रुप से किया है ।

एक औरत अकेली मिली जिस जगह,

मर्द होने लगे जंगली जानवर ।१२

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि हिंदी गजलकारों ने सामाजिक बोध की व्यापकता और गहनता से अभिव्यक्ति की है । फारसी और उर्दू में सामाजिक बोध की अभिव्यक्ति अधिकतर नही हुई । आज भारत की सामाजिक हालत बिगडी हुई नजर आती है । देश में बेकारी, महँगाई, भ्रष्टाचार, धोखाधडी, बेईमानी, धर्म के नाम पर दंगे, पूँजीवाद, मूल्यों का विघटन, टूटती मान्यताएँ, महानगरीय विद्रुपताएँ, नारी शोषण, भय का वातावरण, आतंकवाद, सर्वहरा वर्ग का शोषण, अलगाववाद की समस्या, नई समस्या और फैशन, आम आदमी की पीडा तथा समाज कीं बिगडती हुई स्थिति का अपनी गजलों के माध्यम से समाज का यथार्थ और मार्मिक चित्रण किया है । हिंदी गजलकारों ने अपनी गजलों के माध्यम से सम्पूर्ण की पीडा को वाणी प्रदान की है ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. दुष्यंतकुमार : साये में धूप – पृ. २७.
२. नीरज – गजले ही गजले – पृ. ८२.
३. दुष्यंतकुमार : साये में धूप – पृ. १३.
४. दुष्यंतकुमार : साये में धूप – पृ. २१.
५. दुष्यंतकुमार : साये में धूप – पृ. ४७.
६. डॉ. कुँअर बेचैन : रस्सियाँ पानी की – पृ. १८.
७. दुष्यंतकुमार : साये में धूप – पृ.४७.
८. दुष्यंतकुमार : साये में धूप – पृ. ४८.
९. दुष्यंतकुमार : साये में धूप – पृ. ५५.
१०. डॉ. कुँअर बेचैन : रस्सियाँ पानी की – पृ. २७.
११. डॉ. कुँअर बेचैन : शामियाने काँच के – पृ. ८६.
१२. जहिर कुरेशी : चाँदनी का दुख – पृ. ७३.